दया और प्रेम के गौरवमयी 100 साल

अजायब बानी

मासिक पत्रिका जून-2026

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–चौबीसवां	अंक–दूसरा	जून–2026

2 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा दिया गया एक संदेश
लंगर की सेवा

3 सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
अहंकार

17 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
गुरु का स्वप्न

25 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा एक संदेश
अनमोल संदेश

30 किड्स कॉर्नर
सच्चा शिष्य

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 उप संपादक : **नन्दनी**
e-mail : dhanajaibs@gmail.com 291 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा दिया गया एक संदेश

लंगर की सेवा

जनवरी 1986 मुम्बई

हाँ भई, मुझे खुशी है कि आप लोग पिछले साल की तरह इस साल भी सेवा कर रहे हैं। आप लोगों में कई नए प्रेमी भी हैं जो पहले सेवा में हाजिर नहीं थे। आप नए प्रेमियों को बता दें कि किस तरह खाना बरताना है, खाना उतना ही देना है जितना किसी को जरूरत है। खाना बरताने के वक्त किसी की थाली में पैर न लग जाए और खाना किसी के ऊपर न गिर जाए, उस वक्त अपनी सेवा पर निगाह रखनी है और सिमरन करना है।

सेवा का महत्त्व भजन से कम नहीं होता। जिन प्रेमियों का भजन–सिमरन में मन नहीं टिकता वे देखा–देखी सेवा कर लेते हैं। भजन–सिमरन और सेवा में इतना ही फर्क होता है कि सेवा करके हम अपने अंदर अहंकार पैदा कर लेते हैं कि मैंने यह सेवा की है। जब 'मैं' आ गई तो किया कराया सब समाप्त हो जाता है। भजन–सिमरन करने से हमारे अंदर नम्रता पैदा हो जाती है, हम अहंकार से छुटकारा पा लेते हैं।

आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु।।
विचि दुनीआ सेव कमाईऐ, ता दरगह बैसणु पाईऐ।।

सेवक सतगुरु के दिल में लिखे होते हैं, कहीं कोई यह विचार करे कि मैं जो सेवा करता हूँ यह गिनती में नहीं। सतगुरु कभी भी अपने सेवादार बच्चों को नहीं भूलते, उन्हें याद रखते हैं और उनकी हाजिरी लगवाते हैं। कभी भी किसी के साथ सख्ती से पेश न आएं, सबको प्यार से बुलाएं। अगर किसी को किसी चीज की जरूरत है तो एक बार नहीं वह चार बार माँगता है तो उसे दें। कभी भी दिल में अहंकार न आने दें। गुरु परमात्मा का धन्यवाद करें कि आपने हमें यह बहुत अच्छा मौका दिया है और इसी तरह का मौका मिलता रहे। ✻✻✻

अहंकार

DVD-568(1)

05 जून 1994 स्वामी जी महाराज की बानी घाना, साऊथ अफ्रीका

गुरुदेव परमात्मा सावन–कृपाल के आगे नमस्कार है जिन्होंने हमें अपना यश करने का मौका दिया है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि मैं अपने प्यारे गुरुदेव के आगे लेटकर दंडवत नमस्कार करता हूँ। गुरु पूरे बर्तन होते हैं, समर्थ होते हैं, वे खाली बर्तनों को भरने के लिए ही आते हैं। जैसा–जैसा किसी का बर्तन होता है, वे उसमें वैसी–वैसी वस्तु डालते हैं। वे सर्वकला समर्थ हैं, वे जो चाहे कर सकते हैं। आप मुझे डोलने से पहले संभाल लेना और सदा अपना हाथ मेरे सिर पर रखना।

सूफी सन्त बुल्लेशाह सैय्यद जाति के थे, उनके गुरु ईनायत शाह अराईं जाति के थे जो खेती–बाड़ी करने वाले थे। आमतौर पर ऐसे मौके पर समाज हमारे ऊपर तानाकशी करता है कि यह इतनी ऊँची जाति का होकर नीची जाति वाले अराईं के पास जाता है। आखिर उस अराईं में क्या खासियत है? बुल्लेशाह ने कहा,''अगर कोई बाहर से देखे तो उन्होंने फटे हुए कपड़े ही पहने हुए हैं, वे चमड़े का ही पुतला हैं अगर अंदर जाकर देखें तो बहिश्त में भी नहीं थूकेंगे।'' गुरु तो सच्चखंड के रहने वाले होते हैं, वे कुलमालिक हैं, वे परमात्मा ही मौला बनकर आए हैं।

मैं सदा ही बताया करता हूँ कि सन्तमत परियों की कहानी नहीं, यह सिर्फ बातों का ही मत नहीं होता। यह सच्चाई है, एक हकीकत है। यह पढ़–पढ़ाई का मत नहीं, करनी का मत है। इसमें कुछ करके दिखाने की जरूरत है। संसार और माया के भक्त बनने की जगह गुरु–परमात्मा के भक्त बनने की जरूरत है। इस मत में अवगुण छोड़ने पड़ते हैं और गुण ग्रहण करने पड़ते हैं।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि हमें हर जीव के ऊपर दया करनी चाहिए क्योंकि परमात्मा सबके अंदर है। अगर हमें कोई हमसे ज्यादा ताकतवर मिलता है तो हम उसके आगे अपने आप ही झुक जाते हैं। अगर हम अपने अंदर उस ऊँचे से ऊँचे और सुच्चे से सुच्चे परमात्मा को देख लेते हैं तो हम हर जीव का सम्मान करेंगे कि इसके अंदर ऊँचे से ऊँचे सुच्चे से सुच्चे परमात्मा बैठे हैं।

किसी के दुख को सुनना उसमें भाईवाल बनना उसके दुख को दूर करने का यत्न करना दया है। किसी के अवगुण देखकर माफ कर देना क्षमा है। गुरु के लिए अंदर जगह बनाने के लिए निर्मल हृदय, पवित्र ख्याल बनाने जरूरी हैं। हम रोज परमात्मा के आगे प्रार्थना करते हैं कि आप हमारे अवगुण, पाप बक्ख दें और हमारे ऊपर दया करें लेकिन जब हमने किसी को माफ करना होता है तो हम छोटी सी बात पर सजा देने के लिए तैयार हो जाते हैं। महात्मा हमें बताते हैं कि आप अपने साथ जैसा प्यार चाहते हैं, आप वैसा प्यार दूसरों के साथ भी करें।

सूफी सन्त फरीद साहब कहते हैं कि आप बुरा करने वाले का भी दिल से भला करें, दिल में गुस्सा न करें, आपको कोई रोग नहीं लगेगा बल्कि आपके पल्ले सब कुछ पड़ जाएगा। गुरु परमात्मा आपके अंदर प्रकट हो जाएंगे। आप कहते हैंः

फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ।।
देही रोगु न लगई पलै सभु किछु पाइ।।

हमारे गुस्से के पीछे **अहंकार** छिपा होता है। बच्चों की किताब में एक छोटी सी कहानी आती है कि जब हाथी को गुस्सा, पागलपन या अहंकार आता है तो ये गाँवों में जाकर काफी नुकसान करते हैं। इसी तरह एक **अहंकारी** हाथी हर किसी को अपने पैरों के नीचे रोंद रहा था, वह चींटी तक को भी माफ नहीं करता था।

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

एक दिन चींटियों की रानी ने हाथी के आगे जाकर फरियाद की, ''हम तो बहुत छोटे निर्बल जीव हैं, तू हमारे ऊपर रहम कर।'' लेकिन हाथी ने परवाह नहीं की। चींटियों की रानी हाथी की सूंड में जाकर अंदर नरम जगह पर बैठ गई और उसने हाथी को बहुत जोर से काटा, हाथी चीखें मारने लगा। तब हाथी को पता चला कि मैं तो ऐसे ही **अहंकार** कर रहा था, एक छोटे से जीव ने मेरी क्या हालत कर दी है।

हम **अहंकार** तभी करते हैं जब हम अपनी मौत को भूल जाते हैं अगर हमें अपनी मौत याद हो तो हम अहंकार कर ही नहीं सकते। यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा था, ''दुनिया में अचरज बात क्या है?'' युधिष्ठिर ने उसे जवाब दिया, ''हम अपनी आँखों से लोगों को संसार छोड़कर जाते हुए, मरते हुए देखते हैं लेकिन हमारे ऊपर उस मौत का कोई असर नहीं होता कि हमने भी एक दिन इस संसार को छोड़कर चले जाना है, यही सबसे अचरज बात है।'' आपके आगे स्वामी जी महाराज का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है, गौर से सुनने वाला हैः

मित्र तेरा कोई नहीं संगियन में। पड़ा क्यों सोवे इन ठगियन में।

स्वामी जी महाराज और सभी सन्त-महात्माओं ने हमें चेतावनी दी है कि आप जिस संसार में आए हैं, यह आपका अपना नहीं पराया देश है। आप यहाँ जो भी कारोबार करते हैं, बाल-बच्चे पालते हैं, धन-दौलत इकट्ठी करते हैं या इन्द्रियों के कहने पर विषय भोगते हैं, उनकी तृप्ति करते हैं तो ये सारा पराया काम है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि हमने मन और इन्द्रियों को अपना मित्र बनाया हुआ है लेकिन ये सारे धर्मराज की कचहरी में हमारे खिलाफ होते हैं। हम पति, पत्नी, बच्चों, रिश्तेदारों को अपना हितैशी मित्र समझते हैं, हम सोचते हैं कि ये तकलीफ के वक्त हमें सहारा देंगे, हमें ढांढस देंगे लेकिन तर्जुबा बताता है कि हम एक-दूसरे के साथ मतलब के लिए बंधे

हुए हैं लेकिन जब किसी से हमारा कोई मतलब हल नहीं होता तो हमें अपना भी पराया नजर आने लगता है। नाटक का पार्ट अदा करने वाले एक–दूसरे के साथ बंध जाते हैं, फर्जी रिश्ते कायम कर लेते हैं लेकिन जब नाटक समाप्त हो जाता है तो कोई किसी के साथ नहीं बंधता और न ही किसी को रिश्तेदार समझता है।

इसी तरह सन्त–महात्मा हमें बताते हैं कि यह दुनिया एक नाटक है, हम भी यहाँ उस नाटक की तरह फर्जी रिश्ते कायम करते हैं लेकिन जब संसार का यह तमाशा खत्म हो जाता है, संसार नहीं रहता और हम भी नहीं रहते इसलिए न कोई हमारा मित्र है, न कोई हमें अंत समय में ढांढस दे सकता है और न कोई हमारी मदद ही कर सकता है। सब सन्तों ने संसार को सपने की तरह बताया है, जब सपना आता है तो सच प्रतीत होता है लेकिन जब नींद खुलती है तो वहाँ कुछ भी नजर नहीं आता, कुछ भी सच नहीं होता।

जिउ सुपना अरू पेखाना ऐसे जग कउ जानि।।
इनमै कछु साचो नही नानक बिनु भगवान।।

चेत कर प्रीत करो सतसंग में। गुरु फिर रंग दें नाम अरँग में।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि जागें, इन फर्जी रिश्तों में अपने आपको न भूलें, परमात्मा को न भूलें। सन्त ये भी उपदेश नहीं करते कि आप इन्हें छोड़कर जंगलों–पहाड़ों में चले जाएं। हमने दुनिया को छोड़ना नहीं, दुनिया को भूलने की जरूरत है। आप किसी महात्मा के सतसंग में जाएं। महात्मा सतसंग के जरिए आपके ऊपर चढ़े हुए दुनिया के रंग उतारेंगे और आपके ऊपर नाम का पक्का रंग चढ़ा देंगे। कबीर साहब कहते हैंः

जिनको सतगुरु रंग दिया कभी ना होए कुरंग, दिन दिन बानी अगरी चढ़े सवाया रंग।।

गुरु उनको रंगते हैं जो अपनी आत्मा और मन को गुरु के हवाले कर देते हैं। मैं मिसाल दिया करता हूँ कि गाँव की लड़कियां शहर में चली गई।

वहाँ ललारी बहुत अच्छे-अच्छे दुपट्टे रंग रहे थे। उन लड़कियों ने ललारी से कहा, ''भाई, तू हमारा दुपट्टा भी रंग दे।'' ललारी ने कहा, ''अपने दुपट्टे दे दो, मैं रंग देता हूँ।'' यह कहानी हिन्दुस्तान की परंपरा के मुताबिक है। आमतौर पर हिन्दुस्तान में लड़कियां सिर से नंगी होकर नहीं चलती, पश्चिम का पहनावा अलग है और हिन्दुस्तान का पहनावा अलग है। लड़कियां कहने लगी, ''हम बाजार में किस तरह नंगे सिर हों।'' ललारी ने कहा, ''बहन जी, आप जब मुझे दुपट्टे देंगी मैं तभी उन पर रंग चढ़ाऊंगा।'' इसी तरह अगर हम अपना मन सन्तों के हवाले करेंगे तभी वे हमारे ऊपर अपना रंग चढ़ाएंगे। कबीर साहब कहते हैः

मन दिया कहीं और को तन साधा के संग, कहे कबीर कैसे लगे कोरी गज्जी रंग।।

हमें पता ही है कि कहीं लोकलाज है, कहीं मान-पदवी का ख्याल है, कहीं समाजिक बंधन है। मन को सन्तों के हवाले करना किसी सूरमा बहादुर का ही काम है।

धन सम्पत तेरे काम न आवे। छोड़ चलो यह छिन में।।

स्वामी जी महाराज हमें चेतावनी देते हैं कि आप जो कुछ आँखों से देखते हैं कि हम अच्छा घर बनाएं, हम सारी दुनिया का धन-दौलत अपने पास इकट्ठा कर लें। ऐसा हम तभी सोचते हैं जब हम अपनी मौत को भूल जाते हैं और संसार को सच मानकर चलते हैं। मौत अटल है, पता नहीं मौत की घंटी ने किस समय बज जाना है, हमने किस समय शरीर को छोड़ना है, कहां छोड़ना है, यह सब पहले से ही तय होता है।

आगे रैन अंधेरी भारी। काज करो कुछ दिन में ।।

स्वामी जी महाराज बड़े प्यार से हमें चेतावनी देते हैं कि धन सम्पत्ति हमें यमों से नहीं बचा सकते। साँस की गतिविधि एक क्षण में रूक जाती है, हम सब कुछ छोड़ कर चले जाते है। मौत अटल है, इसे हम किसी भी

तरीके से टाल नहीं सकते। हमारे पास समय कम है और रास्ता लम्बा है। हमें अपने साधनों की तरफ ध्यान देना चाहिए कि हम मौत से किस तरह बच सकते हैं अगर किसी जरनल ने फतेह हासिल करनी है तो सबसे पहले उसे रास्ते के खतरों का, पहाड़ियों का, नदियों का ज्ञान होना चाहिए और फिर उसे अपने बाहुबल का भी ज्ञान होना चाहिए। अगर उसे रास्ते के खतरों का पता है तो जीत आसान हो जाती है।

इसी तरह हमें मौत से बचने का साधन पता हो क्योंकि समय थोड़ा है, सफर लम्बा है। सन्त–महात्मा हमें बताते हैं कि हमें उस खतरे का ध्यान रखना चाहिए कि कौन हमारी मदद करेगा, वह रास्ता कितना लम्बा है, कितना गहरा है? उस रास्ते में अंधेरा है। सब सन्तों ने उस रास्ते के अंधेरे को बयान किया है। गुरु अर्जुनदेव जी ने भी उस अंधेरे रास्ते का जिक्र किया है। आप सुखमनी साहब में पढ़ते हैंः

जिह मारग के गने जाहि न कोसा। हरि का नामु ऊहा संगि तोसा।।
जिह पैडै महा अंध गुबारा, हरि का नामु संगि उजियारा।।

सन्तों ने हमें डराने के लिए या मनोरंजन के लिए बानियां नहीं लिखी। सन्तों की बानियां सच्ची होती हैं, उन्होंने अपने अंदर जाकर इन चीजों का अनुभव किया होता है। वह हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए मील पत्थर होते हैं। सन्त–महात्मा जो तालीम लिख जाते हैं, आने वाले महात्मा उसे ताजा कर जाते हैं और उस सच्चाई के साथ फिर जोड़ जाते हैं।

यह देही फिर हाथ न आवे। फिरो चौरासी बन में।।

स्वामी जी महाराज हमें बताते हैं कि इंसानी जामा कितना अमोलक है अगर यह मौका एक बार हाथ से निकल गया तो पता नहीं फिर यह मौका हाथ आए या न आए? आप कहते हैंः

चारों जुग चौरासी भोगी, अति दुख पाया नर्क रहा।

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

आप प्यार से कहते हैं कि यह देह बार–बार नहीं मिलेगी। परमात्मा ने जीव आत्मा को देह इसलिए दी है कि यह अपने पापों की मैल धो ले, 'शब्द–नाम' की कमाई करे और वापिस अपने घर आ जाए।

यह तन दुर्लभ तुमने पाया, कोटि जन्म भटका जब खाया।
अब या को बिरथा मत खोबो, चेतो छिन छिन भक्ति कमावो।
भक्ति करो तो गुरु की करना, मार्ग शब्द गुरु से लेना।।

गुरु सेवा कर गुरु रिझाओ। आओ तुम इस ढंग में।।

अब स्वामी जी महाराज हमें प्यार से कहते हैं कि हम इंसानी जामें से तभी फायदा उठा सकते हैं जब हम किसी पूरे महात्मा की शरण में जाएं। वह आपको तन, मन और धन की जो सेवा बताते हैं, उसे करके आप गुरु को खुश कर लें। सन्तों ने हमारे तन, मन और धन का कुछ नहीं करना, यह सिर्फ सेवक के फायदे के लिए करवाया जाता है। आप इस कार्यक्रम में देख लें अगर प्रेमी तन की सेवा न करते तो हम किस तरह बैठकर सतसंग कर सकते थे अगर प्रेमी धन की सेवा न करते तो यहाँ इतना इंतजाम नहीं हो सकता था। हम सब रोज ही बैठकर मन की सेवा करते हैं। सिमरन करना और बुरे ख्यालों से बचना मन की सेवा है।

गुरु बिन तेरा और न कोई। धार बचन यह मन में।।

स्वामी जी महाराज ऊपर बताकर आए थे कि जिन्हें आप अपना मित्र समझते हैं, अंत समय में किसी ने भी आपकी मदद नहीं करनी। पत्नी, पति को छोड़कर चली जाती है यह नहीं बताती कि मैं कहाँ जा रही हूँ। पति, पत्नी को छोड़कर चला जाता है, वह भी नहीं बताता। पिता, बेटे को छोड़कर चला जाता है। बेटा, पिता को छोड़कर चला जाता है। जिन बेचारों को यह पता नहीं कि मौत का फरिश्ता आया कहाँ से और कान से पकड़कर ले कहाँ गया, वे दूसरों की क्या मदद कर सकते हैं? कौन हमारा

है जो मौत के समय काम आए। मौत का वक्त सबसे मुश्किल है, मौत अटल भी है और दुखदायी भी है। हम सतसंगियों के साथ हमेशा ही ऐसे अनुभव होते रहते हैं।

सन्त–सतगुरु अपने प्यारे बच्चों की बहुत आफतों में मदद करते हैं। जो प्रेमी भजन–सिमरन करते हैं या जो सुनकर भी भरोसा करते हैं, अंत समय में सतगुरु उनकी भी संभाल करते हैं। बहुत सारे प्रेमी तो पहले ही बता देते हैं कि हमने फलाने समय जाना है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

सज्जण सेई आखिए जो चलदयां नाल चलन, जित्थे लेखा मंगिए तित्थे खड़े दसन।

जगत जाल में फँसो न भाई। निस दिन रहो भजन में।।

आप प्यार से कहते हैं कि हम जो कुछ भी इन आँखों से देखते हैं यह लोकलाज है। काल ने जीवों को फँसाने के लिए विषय–विकारों के चोगे फैलाये हुए हैं। आप इन जालों में न फँसें, उठते–बैठते, सोते–जागते भजन में लग जाएं।

साध गुरु का कहना मानो। रहो उदास जगत में।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि आप सन्तों के कहे मुताबिक जीवन ढालें। संसार को छोड़ना नहीं, परिवार को छोड़ना नहीं, इसमें रहते हुए उदास रहना है। जिस तरह मेहमान किसी के घर जाकर मनमर्जी की सहुलियत नहीं मांगता। यह घर वालों की मौज है कि वे उसके साथ कैसा व्यवहार करते हैं, कैसे उसकी देखभाल करते हैं। मेहमान का ध्यान अपनी मंजिल की तरफ होता है कि मैंने यहाँ थोड़ा समय ही रहना है।

जिस तरह मेहमान के दिल में उदासी छाई रहती है अगर हम भी दिल में यह ख्याल रखें कि परमात्मा हमारी देखभाल कर रहे हैं। पता नहीं हमने किस समय यहाँ से चले जाना है, हमारा घर तो सच्चखण्ड में है इसलिए हमारे अन्दर अपने आप ही उदासी छा जाती है।

छल बल छोड़ो और चतुराई। क्यों तुम पड़ो कुगति में।।

मन हमारे अन्दर बैठा है, यह हमें जल्दी से साध गुरु का कहना नहीं मानने देता। जब गुरु नानकदेव जी ने शिष्यों को हुक्म दिया कि मुरदा खाओ, सारे ही भाग गए अगर हम मुरदे के साथ लग जाएं तो नहाते हैं। यह शरीर एक दिन मुरदा ही हो जाता है, हम इसके साथ कितना प्यार करते हैं। जब उन्होंने कहा कि मुरदा खाओ तो कोई भी तैयार नहीं हुआ सिर्फ भाई लैहणा ही रह गए। बाद में गुरु नानक देव जी ने भाई लैहणा को अंगद बनाया।

अंगद देव जी मुरदे के चारों तरफ घूमने लगे तो गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''तू इसे खाता क्यों नहीं, चारों तरफ क्यों घूम रहा है?'' अंगद देव जी ने कहा, ''सच्चे पातशाह मैं इसे पैरों की तरफ से खाऊं या सिर की तरफ से खाऊं।'' जब उन्होंने मुरदे से कपड़ा उठाया तो वह प्रसाद बना हुआ था। इस तरह यह मन अड़ियल घोड़ा है, यह सुतर बेलगाम है। यह कब गुरु का हुक्म मानने देता है?

सुमिरन करो गुरु को सेवो। चल रहो आज गगन में ।।

जो आज अनपढ़ है या अंधेरे में है और मरने के बाद वह यह कहे कि मुझे प्रकाश मिल जाए या मेरे बाद कोई एम.ए. या बी.ए. की डिग्री भेज देगा तो उसका यह ख्याल गलत है।

जो कुछ बने सो अभी बनाओ, फिर का कुछ न भरोसा धरना।

सन्त यह नहीं कहते कि आपको शरीर छोड़ने के बाद सच्चखंड मिलेगा। वे कहते हैं कि प्यारेयो, आप जल्दी से जल्दी अपना सिमरन का कोर्स पूरा करें। सेवक की ड्यूटी है कि वह सिमरन के जरिए फैले ख्याल को आँखों के पीछे लाए, हमारा तीसरा तिल वह स्कूल है जहाँ पहुँचना सेवक की ड्यूटी है, आगे गुरु की ड्यूटी है। महाराज सावन सिंह जी कहा

करते थे, ''स्कूल में जाना बच्चे की ड्यूटी है, बच्चा स्कूल जाएगा तभी टीचर उसे पढ़ाएगा। अगर बच्चा स्कूल न जाए घर में ही धूप जलाने लग जाए, विनतियां करने लग जाए कि मुझे पास कर दें तो वह पास होने की आशा किस तरह कर सकता है।''

मैं अपनी जिंदगी का वाक्या बताया करता हूँ कि जब मैं पूना सिग्नेलर का इम्तिहान देने गया, वह इम्तिहान बहुत कठिन था। हमारे टीचर ने जाने से पहले ही कह दिया कि भई देखें, आप जो देवी-देवता पूजकर आए हैं, मैं उन्हें नहीं मानता, मुझे तो काम प्यारा है। जहाँ हम विनतियाँ और अरदासें करते हैं, वहाँ हमारा फर्ज बनता है कि हम उस रास्ते पर भी चलें और मेहनत भी करें। कबीर साहब कहते हैं:

कबीर कालि करंता अबहि करू अब करता सुइ ताल।
पाछै कछू न होइगा जउ सिर परि आवै कालु।।

कल की खबर काल फिर लेगा। वहाँ तुम जलो अगिन में।।
अब ही समझ देर मत करियो। ना जानूँ क्या होय इस पन में।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि होश करें, जागें और उठें। पता नहीं मौत की घंटी कब बज जाए, कब काल ने गला दबा लेना है।

यों समझाय कहें राधास्वामी। मानो एक बचन में।।

स्वामी जी महाराज ने इस छोटे से शब्द में बड़े प्यार से बताया है कि इस संसार की असलियत यह है कि इनमें कोई भी आपका मित्र नहीं है इसलिए सतगुरु का कहना मानकर 'शब्द-नाम' की कमाई करें। सन्त-सतगुरु हमें जो सिमरन देते हैं, उनका दिया हुआ सिमरन ईमानदारी से करें। आप जितनी जल्दी यह सफर तय कर लेंगे उतना ही अच्छा है, जिंदगी का क्या ऐतबार है।

स्वामी जी महाराज आखिर में यही हिदायत करते हैं कि प्रेमी के लिए एक ही लफ्ज काफी होता है। गुरु गोबिंद सिंह जी के वक्त भाई बेला हुआ है। जब भाई बेला गुरु साहब की सेवा में गया तो गुरु साहब ने उससे पूछा, ''क्यों भई भाई बेला, तू कुछ पढ़ा–लिखा है?'' उसने कहा, ''नहीं जी, मैं जमींदार हूँ, घोड़ों की बहुत सेवा कर लेता हूँ।''

उस समय गुरु साहब को ऐसे आदमियों की जरूरत थी, गुरु साहब ने भाई बेला को घोड़ों की सेवा के लिए रख लिया। भाई बेला जमींदार आदमी था, उसने थोड़े ही दिनों में घोड़े तैयार कर दिए। गुरु साहब ने कहा कि तू रोज हमसे एक तुक ले लिया कर। एक दिन गुरु साहब जंग में जा रहे थे, उन्होंने जुल्म की खातिर तलवार उठाई हुई थी। भाई बेला ने सोचा कि मेरी तुक न रह जाए, उसने गुरु साहब से कहा कि मुझे तुक दे जाएं। गुरु साहब ने कहाः

वाह भाई बेला ना पछाणे वक्त ना पछाणे वेला।

भाई बेला सारा दिन उसी तुक को रटता रहा, वह प्रेमी आत्मा था उसने गुरु के हुक्म को हदीस ही समझा। पढ़े–लिखे लोगों ने कहा कि गुरु साहब तो इससे पीछा छुड़वाकर गए थे और यह उसी को हदीस समझकर बैठा है। जब गुरु साहब आए तो उन्होंने गुरु साहब से कहा, ''क्या आप भाई बेला को कुछ पढ़ाकर गए थे, उसे कोई तुक देकर गए थे?'' गुरु साहब ने कहा, ''नहीं।'' उन लोगों ने कहा कि भाई बेला तो सारा दिन कहता जा रहा हैः

वाह भाई बेला ना पछाणे वक्त न पछाणे वेला।

गुरु साहब ने हँसकर कहा, हाँ भाई, जिसने वेला वक्त नहीं देखा उसी ने पाया है। बेला की सुरत अंदर लगी थी, उसकी जुबान ही बोल रही थी। जो बीस, तीस और चालीस साल के प्रेमी सतसंग में रह रहे थे, उन्हें ऐतराज हुआ कि बेला कल आया है और आज इसकी सुरत नाम में

लगी हुई है, गुरु दरबार में इंसाफ नहीं है। गुरु साहब ने उन्हें कहा कि आप भांग लाओ और उसे रगड़ो। कायदा यह है कि भांग को जितना रगड़ते हैं, उसमें उतना ही ज्यादा नशा होता है। कुछ प्रेमियों को तो कह दिया कि आप इसे गले से नीचे कर लो और कुछ को कह दिया कि आप इसका कुल्ला करके फैंकते जाओ। जिन्होंने गले से नीचे की थी, उनसे पूछा कि क्यों भई कोई नशा आया? वे कहने लगे कि हाँ जी अपने आपको भूले बैठे हैं। जिनसे कुल्ले करवाए थे उनसे पूछा तो वे कहने लगे कि महाराज जी, नशा तभी आता अगर हम इसे गले से नीचे करते। हमारी भी यही हालत है कि हम जो कुछ सुनते हैं, उसे एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देते हैं लेकिन उसे अपने अंदर ग्रहण नहीं करते।

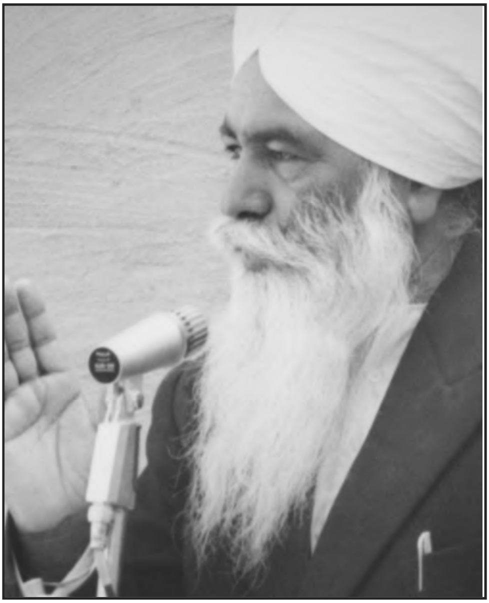

इसलिए स्वामी जी महाराज कहते हैं कि जैसे भाई बेला ने गुरु के एक ही लफ्ज को हदीस समझ लिया तो उसका सब कुछ बन गया। इसी तरह प्रेमी के लिए एक ही लफ्ज काफी होता है, वह लफ्ज यह है कि गुरु के बताए हुए रास्ते पर चलना।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं, हजार काम छोड़कर भजन-अभ्यास में बैठें। आप जितनी देर आत्मा को खुराक नहीं दे लेते तब तक शरीर को खुराक न दें।''

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

गुरु का स्वप्न

DVD-612(4)

06 मार्च 1992

जयपुर, राजस्थान

एक प्रेमी:– *जब हम उन चीजों के बारे में लोगों से बातचीत करते हैं जो आप हमें सपनों के जरिए या अभ्यास में देते हैं तो क्या हम वह सब कुछ खो बैठते हैं या थोड़ा बहुत खोया जाता है? अगर हम तजुर्बों के बारे में बात करें तो क्या हमें वैसा तजुर्बा दोबारा हो सकता है या किसी से बातचीत करने से वह तजुर्बा हमेशा के लिए खो जाता है और इसका हमारे अभ्यास पर क्या असर पड़ता है?*

बाबा जी:– हाँ भई, बहुत अच्छा सवाल है। इस किस्म के कई सवालों के जवाब सन्तबानी मैगज़ीन में छप चुके हैं जिनमें बताया गया है कि मन आपको किस तरह परेशान करता है अगर आप लोग मैगज़ीन पढ़ने की आदत डाल लें तो आपको ऐसे सवालों के जवाब एक नहीं तो दूसरी मैगज़ीन में बड़ी आसानी से मिल सकते हैं।

मैं आपको इस सवाल का जवाब दो हिस्सों में समझा रहा हूँ। **पहला हिस्सा** दुनियावी सपनों का है। आमतौर पर हम दिन में जो कारोबार करते हैं, स्वप्न उसी सोच से जन्म लेते हैं। जागृत अवस्था में हमारी आत्मा तीसरे तिल पर होती है, हमें पूरी होश होती है। जब हम सोते हैं तो यह कंठ में आ जाती है, कुछ बातें याद रहती हैं और कुछ याद नहीं रहती। जब आत्मा इससे नीचे नाभि में उतर जाती है तो हम गहरी नींद में चले जाते हैं फिर हमारी चेतन शक्ति पूरी जागृत अवस्था में नहीं होती। उस समय हम जो सोच रहे होते हैं, वह अधूरा होता है। किसी का हाथ नहीं

तो किसी का पैर नहीं होता। कई बार हम स्वप्न में दौड़ते हैं, दौड़ा नहीं जाता। कई बार स्वप्न में डर भी लगता है। सतसंग में बताया जाता है कि नाम से बिछुड़कर हमें न जागते हुए शान्ति है और न सोते हुए शान्ति है। सोते हुए भी हम 'मारो-मारो!' 'पकड़ो-पकड़ो!' करते हैं, हमें चैन नहीं होता। आमतौर पर ऐसे स्वप्न भयानक होते हैं और कई बार डरावने स्वप्न भी आ जाते हैं।

दूसरा हिस्सा आपने **गुरु के स्वप्न** के बारे में पूछा है कि अगर हमें स्वप्न में गुरु नज़र आते हैं और अच्छा तजुर्बा होता है तो क्या हमें इन तजुर्बों के बारे में लोगों को बताना चाहिए?

सदा बताया जाता है कि सतगुरु नामरूप पवित्र बर्तन होते हैं। आँखों से नीचे इन्द्रियों के भोग और विषय-विकार हैं। गुरु पवित्र हस्ती हैं। गुरु कभी भी हमें आँखों से नीचे आकर दर्शन नहीं देंगे और न मिलेंगे लेकिन अफसोस से कहना पड़ता है कि हम सतसंगी इतना अभ्यास नहीं करते। जो लोग अभ्यास करते हैं, वे इस चीज़ को अच्छी तरह समझ जाते हैं। जब कभी हम अभ्यास करके सोए होते हैं तो हमारी आत्मा शान्त होती है, ऐसे वक्त में गुरु अपनी प्यार भरी नज़र की कुंडी से आत्मा को इन नौ द्वारों में से खींचकर ऊपर के मंडलों में ले जाते हैं। जब भी गुरु के दर्शन होते हैं, ऊपर के मंडलों में ही होते हैं। कई बार जिन अभ्यासियों का पर्दा सिमरन और अभ्यास के वक्त नहीं खुलता ऐसे वक्त में खुल जाता है।

मन हमारा जानी दुश्मन है, यह काल का एजेन्ट है। इसकी यही ड्यूटी है कि कोई भी आत्मा सतगुरु से नाम प्राप्त न कर सके अगर आत्मा नाम प्राप्त कर भी ले तो अभ्यास न कर सके अगर यह अभ्यास करे भी तो मन इसे भ्रम में डाल देता है; मन कोई भी मौका हाथ से नहीं जाने देता।

मैं जब पहले टूर पर नैनेमो द्वीप गया, वहाँ नामदान का कार्यक्रम हुआ। प्रेमियों को काफी अच्छे तजुर्बे हुए और सबने खुशी-खुशी अपने तजुर्बे

बताए। वहाँ पर प्रेमियों ने यह भी सवाल किया कि हमने जो कुछ यहाँ देखा है क्या हम घर जाकर भी देख सकेंगे? मैंने हँसकर कहा, ''हाँ भई प्यारेयो, इसे आप घटा नहीं सकते, आगे बढ़ाना आपका फर्ज है।''

जब आँखों से देखकर भी मन हमें भ्रम में डाल सकता है तो स्वप्न में सतगुरु ने दया-मेहर करके हमारी आत्मा को ऊपर खींचा होता है, मन के लिए इसे भ्रम में डालना आसान ही होता है।

एक बीबी ने महाराज सावन सिंह जी से कहा, ''रुहानियत में मुझे जो तजुर्बे होते थे, अब वे समाप्त हो गए। मैंने किसी को अपने तजुर्बे के बारे में बता दिया।'' महाराज जी ने कहा,''इसमें गुरु का क्या कसूर है? आपको कोई कीमती हीरा मिला हो अगर आप लोगों को उस हीरे का भेद देंगे तो वे आपका हीरा चुरा लेंगे।'' इसी तरह दूसरे लोगों को जलन होती है कि इसने इतनी तरक्की कर ली है, उसके बुरे कर्मों का प्रभाव हमारे ऊपर पड़ जाता है हमारी आत्मा का शीशा धुंधला हो जाता है।

अबोहर में महाराज कृपाल का एक प्रेमी सर्विस करता था। वह बहुत अभ्यासी था, उसे महाराज कृपाल पर काफी भरोसा था। उसके साथ भी ऐसा ही हुआ कि उसने किसी को बता दिया कि उसे जो प्रकाश दिखाई देता था वह गुम हो गया। जब उसे महाराज जी के आने का पता चला तो वह मेरे आश्रम आया। उसने रोकर कहा, ''मेरा तो सब कुछ खो गया है, मुझसे बहुत बड़ी गलती हुई है।'' महाराज कृपाल ने कहा, ''अगर तू किसी हब्शी को शीशा दिखाएगा तो वह उस शीशे को तोड़ देगा।''

दो साल पहले पंजाब का एक प्रेमी 16 पी.एस. आश्रम से नामदान प्राप्त करके गया। उस प्रेमी ने अपने गांव में जाकर सतसंगियों को बहुत ऊँचे-ऊँचे तजुर्बे बताने शुरू कर दिए। एक सतसंगी को बहुत ईर्ष्या हुई, उस सतसंगी ने मुझे पत्र लिखा कि बहुत अफसोस है कि हमें नाम लिए

हुए दस–बारह साल हो गए हैं। इसी तरह उस गांव से एक और प्रेमी का ऐसा पत्र आया कि मुझे नाम लिए हुए बीस साल हो गए हैं, मैं अभी तक इतनी तरक्की नहीं कर सका लेकिन इस प्रेमी ने कल नाम लिया है और यह इतनी तरक्की क्यों कर रहा है?

मैंने उन प्यारों को पत्र लिखा कि आप थोड़ा समय रूकें, मेरा पत्र पहुँचने तक इसके तजुर्बे बंद हो जाएंगे। वह प्रेमी हर महीने सतसंग में आता है लेकिन तजुर्बे बंद होने से तड़पने लगा है। मैंने उससे कहा, ''देख प्यारेया, वह तो सतगुरु की दया–मेहर थी। अब तू मेहनत कर हिम्मत कर सब कुछ तेरे अंदर ही है।'' जब आप दूसरे लोगों को अपने तजुर्बों के बारे में बताएंगे तो उन्हें जलन होती है कि यह इतनी तरक्की क्यों कर रहा है। इससे उसका फायदा नहीं लेकिन आपका नुकसान जरूर होगा।

महाराज सावन सिंह जी और महाराज कृपाल सिंह जी ने हमेशा यही सलाह दी अगर परमात्मा आपके ऊपर दया–मेहर करते हैं तो आप उसे कोड़ियों की तरह मत छनकाएं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''आपके अंदर से धुंआ तक भी नहीं निकलना चाहिए कि हम कुछ देखते हैं या हम कुछ हैं, यह सारी सतगुरु की दया है।''

प्यारेयो, दुनिया के स्वप्न तो बिना सोचे समझे ही आ जाते हैं लेकिन **गुरु का स्वप्न** नहीं आता। कई प्रेमी बहुत कोशिश करते हैं, गुरु को याद करके सोते हैं। कई प्रेमियों के पत्र भी आते हैं कि हम घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना करते हैं कि हमें स्वप्न में गुरु के दर्शन हो जाएं। बहुत ठंडे दिल से सोचने की जरूरत है कि सतगुरु कभी भी आपको नौ द्वारों से नीचे आकर दर्शन नहीं देंगे। **गुरु का स्वप्न** कभी नहीं आएगा।

गुरु जब भी अपनी प्यार भरी दृष्टि से आपकी आत्मा को ऊपर खींचेंगे आप ऊपर के मंडलों के नज़ारे देख सकेंगे। सतसंगी को चाहिए कि वह

उस वक्त से पूरा फायदा उठाए, रोज उसी स्वरूप को अपनी आँखों के आगे रखकर भजन–अभ्यास करे, उससे फायदा उठाए और तरक्की करे।

प्यारेयो, सन्तमत परियों की कहानी नहीं यह एक सच्चाई है, यह करनी का मत है, बुद्धि विचार का मत नहीं। चाहे बच्चा, बूढ़ा, औरत, मर्द कोई भी भक्ति करे। कबीर साहब कहते हैं, ''कथनी करने वाले अनेकों सूरमें मिल जाते हैं जिन्होंने एक–दूसरे को नीचा दिखाने के लिए मन–बुद्धि से बहुत तीर कसे होते हैं। मथ निकालने वाले बहुत थोड़े होते हैं जो कमाई करके सच्चाई के साथ जुड़ते हैं।'' महाराज कृपाल ऐसे लोगों को दिमागी पहलवान कहा करते थे कि ये दिमागी कुश्ती करते हैं, यह बातों का मजबून नहीं करनी का मजबून है। आप नए भजनों में पढ़ते हैं:

ऐह गल्लां दा मजबून नहीं कोई वी करके देखे।

आपको आसानी से समझ आ गई होगी कि दुनियावी स्वप्न में कोई खुशी नहीं होती, जिस दिन भी गुरु के दर्शन होते हैं उस दिन खुशी होती है सारा दिन दिल गुलाब के फूल की तरह खिला रहता है। आप इसे स्वप्न नहीं सच्चाई समझें, इसी स्वरूप को आँखों के आगे रखकर तरक्की करें।

एक प्रेमीः– *जब हम मर जाते हैं हमारी आत्मा ऊपर जाती है तो क्या वह उसी जगह हमारे पिता के पास जाती है जहाँ से हम आए हैं? क्या हम दोबारा इस धरती पर कभी आते हैं? हमारा पुनर्जन्म कहाँ होता है?*

बाबा जीः– हाँ भई, बड़ा दिलचस्प सवाल है, गौर से समझना है। हिन्दुस्तान और पश्चिमी देशों में भी यह रिवाज है कि जब कोई शरीर छोड़ता है तो उसके जाने के बाद लोग उसका क्रिया–कर्म या रीति–रिवाज़ करते हैं। बाबा जयमल सिंह जी से किसी प्रेमी ने पूछा था कि जब हमने नाम ले लिया है तो क्या हमें वे रीति–रिवाज करने चाहिए?

बाबा जयमल सिंह जी ने उस सतसंगी को बहुत प्यार से बताया कि जिस दिन नाम मिल जाता है उस दिन उस जीव का जन्म सतगुरु के घर में हो जाता है और उसका सारा क्रिया–कर्म भी हो जाता है।

मैंने बगोटा में रत्न–सागर पर कई सतसंग किए थे, मैं आशा करता हूँ आप मैगज़ीन पढ़ेंगे तो आपको बहुत आसानी से समझ आ जाएगी फिर भी मैं आपको कुछ समझाना चाहूँगा। जब सतगुरु नाम देते हैं तो वे सेवक के अंदर बैठ जाते हैं और तब तक सेवक को नहीं छोड़ते जब तक उसे धुरधाम न पहुँचा दें। दाईं तरफ सतगुरु और बाईं तरफ काल बैठा है। जब आत्मा शरीर छोड़ती है तो पहले हमारे पैर सुन्न होते हैं फिर टखने, घुटने और धीरे–धीरे सारा शरीर सुन्न हो जाता है। जब यह आँखों के पीछे जाती है और शरीर छोड़ती है तो उस वक्त यह बहुत घबराई हुई होती है इसे बहुत दर्द होता है। तुलसी साहब कहते हैंः

काल दाढ़ में आन चबानी, जब ढरके नैनन से पानी।

तब हम कहते हैं कि आँखों से पानी जा रहा है, आत्मा काल के मुँह में चली जाती है क्योंकि वहाँ काल बैठा आवाज़ देता है कि तू इधर आ जा। यह हालत उनकी है जिन्हें नाम नहीं मिला होता जिन्हें नाम मिला होता है, सतगुरु उनकी दाईं तरफ पहले ही बैठे होते हैं और आत्मा को संभाल लेते हैं।

हमें महाराज सावन सिंह जी के चरणों में बैठने का काफी मौका मिला है, यह उनकी दया थी। उस वक्त पंजाब में बहुत जबरदस्त विरोधता थी, एक–दूसरे से पवित्र नाम पूछते थे कि हम लोगों को बता दें कि आप वहाँ क्या लेने जाते हैं। वहाँ जो बताते हैं, वह हम ही आपको बता देंगे।

इसी तरह एक दिन वे नामदान दे रहे थे, कोई प्रेमी आकर पाँच पवित्र नाम सुन गया और बाहर जाकर लोगों को बताने लगा। किसी ने आकर

महाराज सावन सिंह जी से कहा कि जब आप 'नामदान' दे रहे थे तो फलां आदमी चोरी से पाँच पवित्र नाम सुन गया। अब वह बाहर लोगों को बता रहा है। महाराज जी ने कहा, ''देखो भई, नाम तवज्जो होती है, गुरु की संभाल होती है अगर कुत्ता कपास के खेत में से गुजर जाए तो वह सूट नहीं बना सकता।''

वे कहा करते थे कि गुरु तब तक सेवक को नहीं छोड़ते जब तक उसे धुरधाम न पहुँचा दें अगर हमने भूतों की तरह यहीं चक्कर लगाने हैं तो सतगुरु से नाम लेने का क्या फायदा। सतसंगी को भूलकर भी यह नहीं सोचना चाहिए कि हमारा पुनर्जन्म कहाँ होगा। अब आपका जन्म सतगुरु के घर में हो गया है।

ऐसा सवाल सिद्धों ने भी गुरु नानकदेव जी से किया था कि हे प्यारेया, आपने अपना जन्म-मरण कैसे खत्म किया है, यह दवाई आपको कहाँ से मिली थी? गुरु नानकदेव जी महाराज ने उन्हें बहुत प्यार से बतायाः

सतिगुरू कै जनमे गवनु मिटाइआ, अनहति राते इहु मनु लाइआ।।

मैं आमतौर पर महाराज सावन सिंह जी का वचन दोहराया करता हूँ कि एक कुम्हार किसी राजदरबार में मिट्टी फैंकने जा रहा था। वह अपनी गधियों को हाँकता हुआ कह रहा था कि चल बीबी, चल बहन, चल माता। यह देखकर किसी आदमी ने उससे पूछा कि तुम आदमी हो और यह गधियाँ हैं, तुम इन्हें माता-बहन क्यों कह रहे हो? कुम्हार ने कहा कि तुम्हें पता नहीं है, हम खुल्ला बोलने वाले हैं। मैंने राज-दरबार में जाना है, कहीं मेरे मुँह से कोई गलत लफ्ज न निकल जाए और राजा मुझे सजा दे दे इसलिए मैं यह प्रैक्टिस कर रहा हूँ।

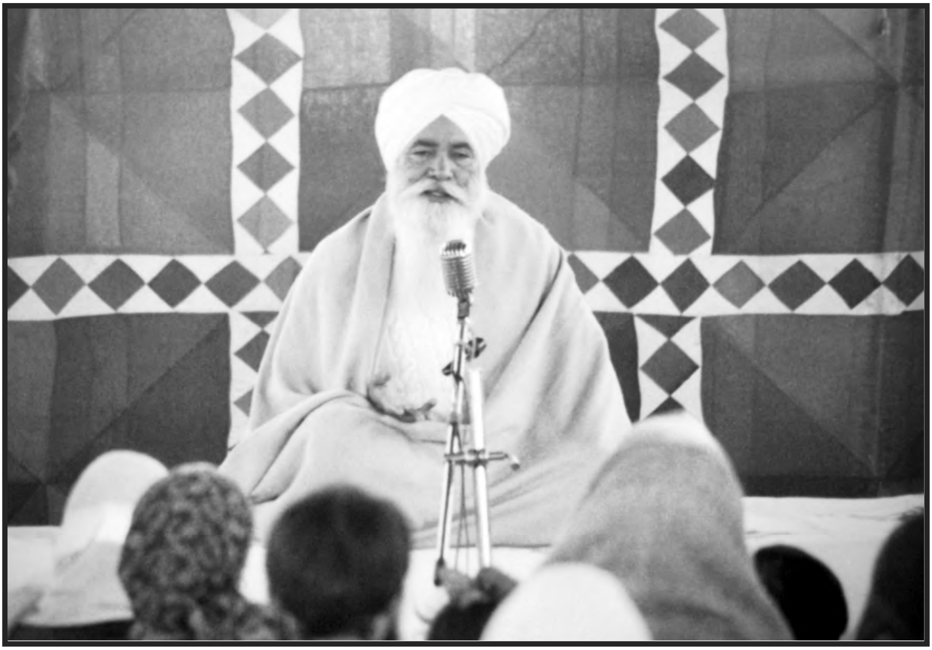

प्यारेयो, हम जो रोज़ भजन-अभ्यास करते हैं और रोज़ अपने सतगुरु के आगे अरदास करते हैं कि अब आप हमें बख्श लें। उन्होंने बख्श कर ही हमें नामदान दिया है, यह हमारी रोज़-रोज़ की प्रैक्टिस ही है।

हमारा फर्ज़ बनता है कि हम जीते-जी इतना अभ्यास करें कि मन-इन्द्रियों की गुलामी से आज़ादी पाकर स्वतंत्र हो जाएँ और हमें यह सोचना ही न पड़े कि हमारा पुनर्जन्म कहाँ होगा?

नानक जीवतिआ मरि रहीऐ ऐसा जोगु कमाईऐ।

क्यों न हम इस तरह से अभ्यास करें कि हम जीते-जी ही जाकर उस जगह को देख लें और अपने गुरु के दरबार में पहुँच जाएँ। बोलने को तो बहुत कुछ है। मेरा दिल भरा हुआ है, मैं क्या बयान करूँ, मेरे गुरुदेव पूर्व-पश्चिम के सब जीवों पर दया कर रहे हैं लेकिन समय हो गया है।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा एक संदेश

अनमोल संदेश

बहुत अच्छा समय है। हमें प्यारे सावन–कृपाल की दया से आज अशान्त कलयुग में सतसंग का मौका मिला है। यह उनकी ही दया है कि हम नाम और उनकी याद के साथ जुड़े। चाहे सतयुग, द्वापर, त्रेता या कलयुग हो, हर युग में नाम जपना मुश्किल है। बेशक कलयुग में सतसंगियों की गिनती ज्यादा है लेकिन सबका ख्याल ज्यादा से ज्यादा फैला हुआ है। जिससे भी पूछें कि क्या वह नाम जपता है? वह यही शिकायत करता है कि फुर्सत नहीं है, टाईम नहीं है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सारो दिनसु मजूरी करै, हरि सिमरन की वेला बजर सिरि परै।

हम पाँच डाकुओं और मन–माया की मजदूरी करते हैं, ये हमें जो हुक्म देते हैं, हम उसे बड़ी आसानी से मानते हैं; इनके आगे सिर झुकाते हैं। सतगुरु कहते हैं कि नाम जपें, नाम जपना आपके लिए फायदेमंद है। नाम जपने वाला सदा शान्त रहता है, नाम में ही शान्ति है। नाम उस ताकत को कहा गया है जो कण–कण में व्यापक है, हर समय हमारी रक्षा कर रहा है, उसी के आधार पर हम सब चल फिर रहे हैं।

यह कितने घाटे का सौदा है, यह हमारी भूल है। जिस ताकत के अंदर होने के कारण लोग हमसे प्यार करते हैं। बच्चे, पति, पत्नियां और रिश्तेदार हमें जी–जी करते हैं। गुरु साहब कहते हैं कि जब वह ताकत हमारे अंदर से निकल जाती है:

घर की नारि बहुतु हितु जा सिउ सदा रहत संग लागी।
जब ही हंस तजी इह काँइआ प्रेत प्रेत करि भागी।।

मियाँ–बीवी का रिश्ता सबसे गहरा है लेकिन जब ऐसा वक्त आता है तो कौन है? मेरा चश्मदीद वाक्या है कि एक आदमी अपने बच्चों से बहुत प्यार करता था। वह कहता था कि मैं बच्चों के बगैर जी नहीं सकता। उस आदमी की मृत्यु हुई, मृत्यु हर किसी की होनी है, हमारी भी होनी है। उसकी पत्नी ने सुबह बच्चों को अपने पिता का मुँह भी नहीं देखने दिया। वहाँ कई लोग खड़े थे, उन लोगों ने कहा कि बच्चों को इस जाते हुए का मुँह दिखाओ लेकिन पत्नी ने मना कर दिया कि बच्चे डर जाएंगे।

यह अपना–अपना विचार है। उन लोगों के दिल को चोट लगी कि इस आदमी ने बच्चों की खातिर भगवान को त्यागा, अपने कई कीमती उसूल त्यागे; हर तरह की ठग्गी–बईमानी करके इन बच्चों को खिलाया। इंसान अपनी पत्नी के लिए क्या–क्या नहीं करता, पत्नी की खातिर पति अपने कई कीमती उसूल भूल जाता है लेकिन वही पत्नी आज बच्चों को उसका मुँह भी नहीं देखने देती कि बच्चे डर जाएंगे।

जिंदगी में ऐसे आम वाक्या देखने में आते हैं, क्या हम यह घाटे का सौदा नहीं कर रहे कि जिस परमात्मा की वजह से हमारा इतना आदर–मान है, क्या कभी हमारा दिल उसके लिए तड़पा? क्या हमने कभी सोचा कि जिसने हमें इतना प्यार भरा जीवन दिया है जो मुफ्त में हमारी रखवाली कर रहे हैं, वह हमसे क्या माँगते हैं?

महाराजा रणजीत सिंह से एक भिखारी ने कहा, ''बादशाह सलामत, कुछ दें।'' महाराजा रणजीत सिंह ने कहा, ''मैं तुझे क्या दूं? परमात्मा ने तुझे दो आँखें दी हैं और मुझे एक ही आँख दी है। मैं तुझे पाँच सौ रूपये देता हूँ तू मुझे अपनी एक आँख दे दे।'' भिखारी घबराया कि कहीं राजा मेरी आँख न निकलवा ले, वह डरकर भागने लगा तो महाराजा रणजीत सिंह ने कहा, ''तू डर मत। मैं तुझे एक हजार रूपये देता हूँ और एक गांव का पट्टा भी तेरे नाम लिख देता हूँ लेकिन तू मुझे एक आँख दे दे।''

वह भिखारी एक आँख के बदले पूरा गांव लेकर अपना अच्छा जीवन बिता सकता था लेकिन फिर भी उसने महाराजा को अपनी एक आँख नहीं दी क्योंकि कोई देने के लिए तैयार नहीं होता। महाराजा रणजीत सिंह ने उस भिखारी से कहा, ''परमात्मा ने तुझे दो आँखें दी हैं और मुझे एक ही आँख दी है, मैं फिर भी परमात्मा की भक्ति करता हूँ उनका शुक्रगुजार हूँ, तुझे भी परमात्मा का शुक्रगुजार होना चाहिए।''

क्या हम कभी परमात्मा के शुक्रगुजार हुए? यह तो परमात्मा की दया है कि उन्हें हम पर तरस आया, वह अपना सुख और शान्ति का देश छोड़कर हमारे लिए इस निचले देश में आए। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

संसारू रोगी नामु दारू मैलु लागै सच बिना।

गुरु नानकदेव जी के माता-पिता सदा ही उन्हें मारते-पीटते रहे, भला-बुरा कहते रहे। गुरु नानकदेव जी के दिल में दया आई कि मैंने इनके पास अपनी जिंदगी का कुछ समय बिताया है। महात्मा दयावान होते हैं। आखिर उनकी माता के मुँह से कहलवाया, ''देख भई नानक, हम तो सारी जिंदगी तुझे अपना बेटा ही समझते रहे और जो तुझे नमस्कार करते हैं, उन्हें भी पागल समझते थे लेकिन हमें आज पता चला है कि तू भगवान है, भगवान के रूप में इंसान बनकर संसार में आया है। तू हमारे ऊपर भी दया कर हमें भी नाम की चिंगारी दे।''

आप सबको शिक्षा मिली है कि आपने नाम जपना है, सतसंगी ने सदा मन को एकाग्र करना है। हम सिमरन के जरिए नौ द्वारे खाली करके मन को एकाग्र कर सकते हैं। ट्रेन, बस में सफर करते हुए या किसी से बातचीत करते हुए आप अपना सिमरन जारी रखें। हम सिमरन नहीं करते ऐसे ही हाय! हाय! करते हैं कि भजन नहीं बनता। सतसंगी का ख्याल तेल की धार की तरह टिका होना चाहिए जिस तरह तेल की धार नहीं टूटती उसी तरह सतसंगी का सिमरन न टूटे।

तीसरा तिल हमारे सफर की शुरूआत है। प्रकाश, तारे, सूरज, चन्द्रमा और गुरु स्वरूप सब कुछ हमारे अंदर है। जब हम एकाग्र होते हैं तो गुरु कभी–कभी खुद भी प्रकट होते हैं और अपनी झलक दिखाते हैं लेकिन जब हम एकाग्रता भंग कर लेते हैं तो ये चीजे वहीं मौजूद होती हैं लेकिन गायब हो जाती हैं। फिर हम कई बार सवाल करते हैं कि पता नहीं ये सच था या झूठ था? मैंने इतना कुछ देखा लेकिन मन को ऐतबार नहीं आता।

सतसंगी को सदा ही सिमरन करना चाहिए। सतसंगी की तवज्जो सिमरन की तरफ होनी चाहिए। सोते हुए गुरु साथ हों, चलते हुए सामने चलते हुए नजर आएं। आप सबने दिल लगाकर भजन–सिमरन करना है।

आप सबकी वापिसी यात्रा की शुभकामना करते हैं। मैं हमेशा ही आपको प्यार से कहा करता हूँ कि रास्ते में ज्यादा बातें न किया करें। आपसे खास विनती है, पहले भी बहुत बार कहा गया है कि जिसने पत्र का जवाब प्राप्त करना है, वह पत्र डाक से भेजे। कोई किसी का पत्र लेकर न आए अगर कोई सेवा देता है तो वह भी न लेकर आएं।

आप जब इंटरव्यू में आते हैं तो उस समय आपको अच्छा समय मिलता है। पहले संगत कम थी, अब संगत बढ़ गई है। आपका फर्ज बनता है कि आप दूसरे प्रेमियों के समय की भी कद्र जानें। आप मतलब की बात तो मेरे पास एक घंटा बैठकर करें, मैं आपकी बात को सुनूंगा और उसका जवाब भी दूंगा।

हर एक की बात प्यार से सुनना मेरा फर्ज है। अंग्रेज इंटरव्यू में आते हैं, वे मतलब की बात करते हैं लेकिन जो जवाब सतसंग में आ गया है, वे उसे लिखकर नहीं लाते। वे यहाँ से कुछ न कुछ कमाकर ले जाते हैं, मुझे खुशी होती है। आप अपने देश में जाकर अभ्यास करके इसे कायम रखें। मैं ऐसा नहीं कहता कि जैसे मेरे पास आए हैं वैसे ही चले जाएं; आप मुझसे कुछ लेकर जाएं।

आप यहाँ आते हैं तो आपको जो सेवा मिलती है, वह करें या भजन पर बैठें। इधर–उधर की बात न करें। जैसा इंसान है आगे ऐसा ही बातें करने वाला मिल जाता है। लंगर बनाते समय सिमरन करें या भजन बोलें। आप गुरु के पास आए हैं, गुरु की शिक्षा पर अमल करें।

महाराज सावन सिंह जी अक्सर भरी संगत में कहा करते थे, ''संगत में हर तरह के आदमी हैं। जो भजन करते हैं और सतसंग में आते हैं उनकी कोई शिकायत नहीं। बूढ़ियों को चुगली इतनी अच्छी लगती है कि अगर इन्हें कोई निन्दा–चुगली करने वाला मिल जाए तो ये सच्चखंड के दरवाजे से भी वापिस आ जाती हैं। सतसंग में और खाना बनाते समय भी बीबीयां मर्दों से ज्यादा भजन बोलती है। सिर पर टोकरी उठाकर भी भजन बोलती हैं, ये सारी सिफतें बीबीयों में हैं।''

मैं आशा करता हूँ कि आप मेरी बातों का बुरा नहीं मानेंगे प्यार से समझने की कोशिश करेंगे। जब भी आएं, प्यार से कुछ कमाकर ले जाएं।

सिकन्दरपुर में महाराज सावन सिंह जी के पास एक लड़की ने जाकर कहा कि फलानी औरत मेरा भजन ले गई। महाराज जी ने पूछा, ''वह तुम्हारा भजन कैसे ले गई?'' वह लड़की उस औरत की चुगली करने लगी तो महाराज जी ने कहा, ''जिसके पास भजन है उसे सोचना चाहिए कि मैं ऐसी बातें न करूं, भजन करने वाला कभी ऐसी बात नहीं करेगा।''

आप सबने भजन–सिमरन करना है। रास्ते में भी अपना सिमरन करते हुए जाना है। सोकर रात न बिताएं, ऐसा न सोचें कि सीट मिल गई है तो यह सोने के लिए है। सतसंगी को भजन करके फायदा उठाना चाहिए।

***

सच्चा शिष्य

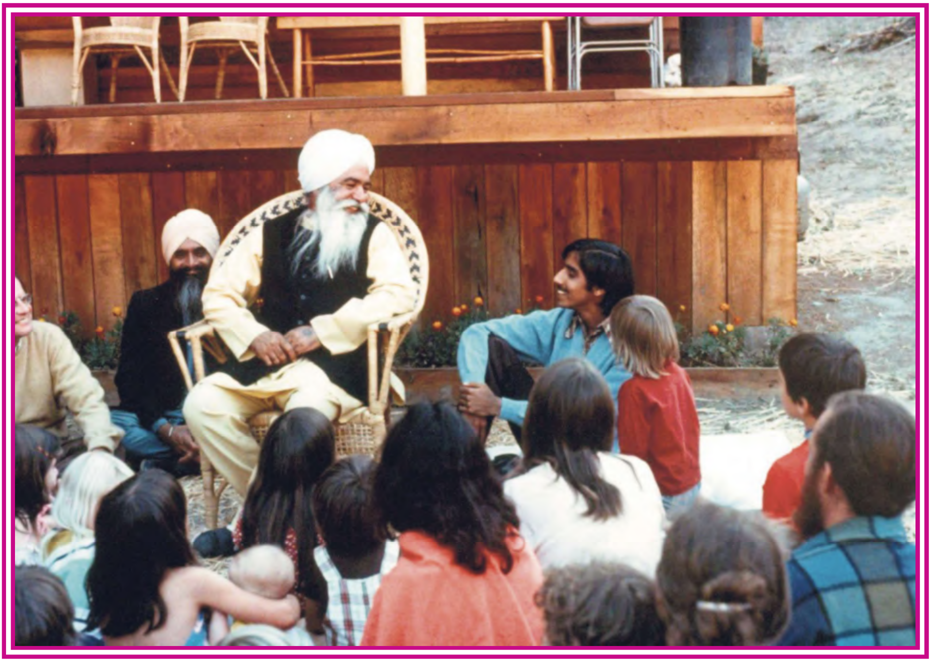

मालवा (पंजाब) में डल्ला नाम का आदमी बराड़ जाति का सरदार था। जब गुरु गोबिंद सिंह जी मालवा की तरफ आए तो डल्ला ने उनसे कहा कि आप हमें याद करते, हमें बुलाते, मेरे पास मालवा के बहुत से जवान हैं, आपकी जंग में हार नहीं होती। गुरु गोबिंद सिंह जी ने उससे कहा, ''देख भाई डल्ला, यह परमात्मा की मर्जी है, मैं उसी में खुश हूँ।'' डल्ला ने कहा, ''नहीं जी, अगर आप हमें बुलाते तो आपको हार का मुँह नहीं देखना पड़ता।''

वे आपस में बातें कर ही रहे थे कि गुरु गोबिंद सिंह जी का कोई सेवक एक अच्छी सी बंदूक लेकर वहाँ आया। गुरु गोबिंद सिंह जी ने

डल्ला से कहा, ''अपने एक आदमी को लेकर आओ, हम देखें कि इस बंदूक का निशाना सही लगता है या नहीं, यह बंदूक ठीक है या नहीं?''

अब डल्ला सोच में पड़ गया कि किसे लाऊँ? वह अपनी जाति के सभी सरदारों के पास गया और उनसे बोला कि गुरु साहब ने बंदूक का निशाना परखना है, आप चलें। अब मौत के मुंह में कौन जाना चाहता है? सबने मना कर दिया। डल्ला गुरु गोबिंद सिंह जी के पास आकर आंखें नीची करके खड़ा हो गया और बोला, ''महाराज जी, कोई भी आने के लिए तैयार नहीं है।'' गुरु गोबिंद सिंह जी ने उससे कहा, ''फिर तुम किस मुंह से कह रहे थे कि आप हमें बुलाते। तुम बाहर जाओ वहाँ हमारे शिष्य होंगे, बस उनसे कह देना कि गुरु साहब ने बंदूक का निशाना देखना है, कोई भी आ जाए।''

जब वह बाहर गया, वहाँ दो शिष्य थे। एक पगड़ी बांध रहा था और दूसरा कंघी से अपने बाल बना रहा था। डल्ला ने उन शिष्यों से कहा कि गुरु साहब ने बंदूक का निशाना परखना है, एक शिष्य की जरूरत है। यह सुनकर वे दोनों जिस हालत में थे उसी तरह भागे। पहले शिष्य ने आकर गुरु जी से कहा कि यह दूसरा शिष्य घोड़ों की बहुत सेवा करता है, इसके बिना घोड़े नहीं संभाले जाएंगे, आप मुझे निशाना बनाएं। दूसरे ने कहा कि इसने चमकौर साहब की जंग में और अन्य लड़ाईयों में बहुत काम किया है। यह बहुत ही माहिर है, क्यों न मुझे निशाना बनाया जाए? वे दोनों आपस में झगड़ा करने लगे।

गुरु गोबिंद सिंह जी ने दोनों से कहा, ''प्यारेओ, तुम दोनों ही बंदूक के आगे खड़े हो जाओ। मैं दोनों पर ही निशाना देख लेता हूँ।'' गुरु साहब ने शिष्यों को क्या मारना था। वे सिर्फ परीक्षा ले रहे थे। उन्होंने बंदूक की नली ऊपर की तरफ करके फायर कर दिया। उन दोनों ने फायर होने पर

आंख तक नहीं झपकी बल्कि जो शिष्य पीछे खड़ा था, उसने आगे वाले को धक्का देकर साइड कर दिया और खुद आगे हो गया। गुरु गोबिंद सिंह जी ने बंदूक ऊपर करके फायर की थी इसलिए गोली उन शिष्यों के सिर के ऊपर से चली गई।

गुरु गोबिंद सिंह जी ने डल्ला से कहा, ''देख भाई डल्ला, इसका नाम सिक्खी है। जंग में तो ऐसे ही प्रेमियों का काम था।''

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें हमेशा परमात्मा की मर्जी में खुश रहना चाहिए। परमात्मा जो करते हैं हमारे लिए अच्छा ही करते हैं। हमें हमेशा अपने गुरु से प्यार करना चाहिए और उन पर विश्वास बनाए रखना चाहिए। वे सब कुछ जानते हैं और उन पर विश्वास रखने से हमेशा ही हमारा फायदा होता है।

नीचे दिए गए उल्टे–सीधे शब्दों को सही करके लिखोः

1. रनमसि = ------
2. वासे = ------
3. मना = ------
4. जनभ = ------
5. चस = ------
6. रुगु = ------

सही उत्तर

1. सिमरन 2. सेवा 3. नाम 4. भजन 5. सच 6. गुरु

***

RNI No - RAJHIN/2003/9899

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज, 11 सितम्बर 1926

जिस तरह मेहमान के दिल में उदासी छाई रहती है अगर हम भी दिल में यह ख्याल रखें कि परमात्मा हमारी देखभाल कर रहे हैं। पता नहीं हमने किस समय यहाँ से चले जाना है, हमारा घर तो सच्चखण्ड में है इसलिए हमारे अन्दर अपने आप ही उदासी छा जाती है।